(1423)

16-2-68 प्रातः क्लास ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। पढ़ाते भी हैं समझाते भी हैं। पढ़ाते हैं रचना और रचना के आदि, मध्य, अन्त का राज़। और समझाते हैं सर्वगुण सम्पन्न बनो। ~~बनो~~ देवीगुण धारण करो। याद करते हैं फिर हम सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम जानते हो इस समय यह तमोप्रधान सृष्टि है। सतोप्रधान सृष्टि थी सो 5000 वर्ष बाद फिर अभी तमोप्रधान बनी है। यह है पुरानी दुनिया। सभी के लिए कहेंगे ना। वा तो नई दुनिया में थे वा शान्तिधाम में थे। तो बाप रूहों को ही बैठ समझाते हैं। हे रूहानी बच्चों अब अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। सतोप्रधान जरूर बनना है। बाप को याद करना है, बाप से ही वर्सा लेना है। लौकिक बच्चे भी याद करते हैं ना। जितना बड़े होते जाते हैं हद के वर्सा पाने हकदार बनते जाते हैं। तुम तो हो बेहद के बाप के बच्चे। बाप से बेहद का वर्सा लेना है। अभी भक्ति आदि करने की दरकार नहीं। यह तो बच्चे समझ गये हैं यह विश्व की युनिवर्सिटी है। सभी मनुष्य मात्र को पार पहुंचाना है। बेहद की धारणा करनी है। जो अभी तमोप्रधान हैं सो फिर सतोप्रधान होंगे। बच्चे जानते हैं इस समय हम बेहद के बाप से बेहद के सुख का वर्सा ले रहे हैं। लौकिक सम्बन्धियों से कुछ न पढ़ना है, न उनके मत पर चलना है। एक ही मत पर चलना है। इस याद की यात्रा से ही तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान हो जाती है। सतोप्रधान बनना है जरूर। फिर सतोप्रधान दुनिया में भी जाना है। तुम्हारे समझ में आता है हम ब्राह्मण हैं। हम बाप के बने हैं। पढ़ रहे हैं। अभी भक्ति नहीं करनी है। पढ़ना है। पढ़ने को ज्ञान कहा जाता है। भक्ति अलग है। बेहद का बाप ज्ञान ही सुनाते हैं। तुम ब्राह्मणों को। और किसी को पता नहीं है कि ज्ञान का सागर बाप जो टीचर भी है वह कैसे पढ़ाते हैं। बाबा टापिक्स तो बहुत ही समझाते रहते हैं। नम्बरवन बात है बाप का बन कर बाप का नामवाला करने, सम्पूर्ण पवित्र भी बनना है। सम्पूर्ण मीठा भी बनना है। यह है ही ईश्वरीय विद्या। भगवान बैठ पढ़ाई है। उस ऊंच ते ऊंच बाप को याद करना है। है तो सेकण्ड की बात। अपने को आत्मा समझो। जानते हो हम आत्मायें शान्तिधाम में निवास करती हैं। फिर आते हैं यहां पार्ट बजाने। पार्ट तो बुधि बैठ गया है। पुनर्जन्म में आते ही रहते हैं। नम्बरवार 84 जन्मों का पार्ट अभी हम ने पूरा किया है। इस पढ़ाई को भी समझना है। पार्ट को भी समझना है। ड्रामा का राज़ भी बुधि में है। जानते हो यह हमारा अन्तिम जन्म है। इस में बाप मिला है। जब 84 जन्मपूरी करते हैं तो फिर पुरानी दुनिया बदलती है। तुम अभी इस बेहद के ड्रामा को, 84 जन्मों को, इस पढ़ाई को जानते हो। 84 जन्म लेते2 अभी पिछाड़ी के जन्म में आये हो। अभी हम पढ़ रहे हैं नई दुनिया में जावेंगे। नये2 भी आते रहेंगे। कुछ न कुछ निश्चय होता रहता है। कोई तो इस पढ़ाई में लग ही जाते हैं। बुधि में है हम याद की यात्रा से सतोप्रधान बन रहे हैं। हम पवित्र बनते2 उन्नति को पाते रहेंगे। बाबा ने समझाया है तुम जितना याद करते हो, तुम्हारी आत्मा पवित्र बनती जाती है। बच्चों की बुधि में सारा ड्रामा बैठा हुआ है। यह भी जानते हो इस दुनिया के सब कुछ छोड़ कर आये। जो इन आंखों से देखते हो वह फिर देखने का है नहीं। यह सब खत्म हो जाने वाला है। बाप कहते हैं तुम पार्ट बजाते बजाते पुनर्जन्म लेते आये हो। अभी तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है। और कोई भी इस बेहद के ड्रामा को नहीं जानते हैं। तुम ही जानते हो। रचता और रचना के 84 जन्मों का सारा चक्र बुधि में है। 84 जन्म लेते2 अभी हम तमोप्रधान बने हैं। फिर बाप आये हैं सतोप्रधान बनाने। जैसे वह इम्तहान 2½ - 2 मास का हुई है। बहुत चीजें याद आती रहती हैं। फिर पक्का हो जायेगा। हम आत्मायें नंगे आये थे। शरीर था नहीं। मित्र सम्बन्धी आदि कुछ नहीं थे। आत्मा शरीर से अलग हो जाती है तो फिर कोई सम्बन्ध नहीं रहता है। गर्भ में जाते हैं तो भी पता नहीं रहता। दूसरे जानते हैं इनके पेट में गर्भ है। कोई आत्मा ने प्रवेश किया है। फिर जितना बड़ा होता जाता है समझ आती है। अभी तुम सारी दुनिया के मनुष्य मात्र के इस पार्ट को